विसर्जन गीत

तर्ज–धर्म की लौ जगायें....

विसर्जन दिवस मनायें हम।
अनासक्ति की जगे चेतना, लक्ष्य बनाएं हम।।

1. अर्जन का संस्कार मनुज में जनम–जनम से गहरा
विशद विसर्जन मनोवृत्ति पर लगा हुआ है पहरा
दृष्टिकोण को बदलें धन आसक्ति मिटाएं हम।।
विसर्जन दिवस....

2. दान भोग विध्वंस अर्थ की गति मानी जाती है,
इनके बल पर अर्थवान की मति मानी जाती है
दान/त्याग का कर प्रयोग उपयोग बढाएं हम।।
विसर्जन दिवस....

3. शिक्षा और चिकित्सा जग में सबके लिए जरूरी
अभयदान संपोषण से मिट जाती है मजबूरी
साधर्मिक वात्सल्य भाव का स्त्रोत बहाएं हम।।
विसर्जन दिवस....

4. 'तुलसी–महाप्रज्ञ' का अभिनव चिंतन विस्मयकारी
युग की जटिल समस्याओं का, समाधान सुखकारी
जीवन दर्शन बने विश्व का अलख जगाएं हम।।
जीवन दर्शन बने विसर्जन गीत सुनाएं हम।।
विसर्जन दिवस.....

Scanned by CamScanner

विसर्जन स्लोगन

1. गुरु तुलसी का पद विसर्जन
जन–जन का करे पथ–दर्शन

2. वक्त की आवाज
अनासक्त हो समाज

3. संयम के दीवट तले
विसर्जन के दीप जले

4. अनासक्ति का खोले द्वार
विसर्जन का करे प्रचार

5. विसर्जन में नहीं चंदा को स्थान
विशुद्ध आध्यात्मिक अभिमान

6. विसर्जन के रूप अनेक
अहं, ईर्ष्या, समय, श्रम एक

7. विसर्जन की यही पुकार
अनासक्त हो घर–परिवार

8. विसर्जन है इच्छा–परिमाण
युग का होगा नव–निर्माण

9. संवेदना के गगन तले
विसर्जन के सुमन खिले

10. आसक्ति का हो वर्जन
अर्जन संग हो विसर्जन

11. सहभागी बनेगा हर परिवार
विसर्जन का स्वप्न होगा साकार

12. आसक्ति की टूटे डोर
मुडे हम विसर्जन की ओर

Scanned by CamScanner